IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तर बिहार में ग्रामीण नगरीय शिशु लिंगानुपात का दसकीय वृद्धि का भौगोलिक अध्ययन

सुबोध कुमार मिश्रा
शोधार्थी
बी॰ एन॰ मण्डल विश्वविद्यालय मधेपुरा

डॉ॰ अश्विनी कुमार झा
भूगोल विभाग
आर॰ एम॰ कॉलेज सहरसा

सारांश :–

किसी प्रदेश की सामाजिक स्थिति एवं अर्थव्यवस्था स्त्री–पुरुष अनुपात की महत्वपूर्ण भूमिका पायी जाती है। स्त्री–पुरुष के अनुपात की माप लिंगानुपात द्वारा की जाती है। किसी जनसंख्या में सभी आयुवर्ग की कुल स्त्रियों एवं पुरुषो की संख्या का अनुपात लिंगानुपात कहलाता है। इसका प्रभाव जनसंख्या वृद्धि, विवाह दर तथा व्यवसायिक संरचना जैसे अन्य जनांकिकीय गुणो पर भी पड़ता है। फ्रेकलिन के अनुसार यह किसी भी क्षेत्र के विश्लेषण के लिए अत्यंत लाभकारी यंत्र है। सामान्यतः लिंगानुपात तीन प्रकार के होते है। प्राथमिक लिंगानुपात यह जन्म के पूर्व का लिंगानुपात है, जबकि द्वितीय लिंगानुपात जन्म के समय तथा तृतीयक लिंगानुपात जनगणना का लिंगानुपात होता है।

जनगणना के समय लिंगानुपात को दो वर्गो में रखा गया प्रथम समान्य लिंगानुपात तथा दूसरा 0–06 आयु वर्ग में शिशुओ का लिंगानुपात। प्रस्तुत लेख में उत्तर बिहार में शिशुओ में लिंगानुपात का अध्ययन किया गया है। शिशुओ में लिंगानुपात की गणना 0–06 वर्ष की अवस्था तक के शिशुओ में लिंगानुपात का अध्ययन किया जाता है। भारत में लिंगानुपात की गणना प्रतिहजार पुरुष में स्त्री की संख्या के अनुपात में किया जाता है। नगरीय शिशु लिंगानुपात की तुलना में ग्रामीण शिशु लिंगानुपात अधिक है। सम्पूर्ण प्रदेश में जिलावार लिंगानुपात में असमानता पायी जाती है। जिसमें सबसे अधिक कुल शिशु लिंगानुपात किसनगंज में 966 है, जबकि सबसे कम वैशाली जिला में 894 है। ग्रामीण शिशु लिंगानुपात सबसे अधिक किसनगंज जिला में 967 तथा सबसे कम वैशाली जिला में 894 है, जबकि नगरीय शिशु लिंगानुपात किसनगंज जिला में 952 तथा सबसे कम नगरीय शिशु लिंगानुपात सिवान जिला में 880 है। अन्य जिलो में भी शिशु लिंगानुपात कम है। नगरीय एवं ग्रामीण शिशु लिंगानुपात में दसकीय वृद्धि में भी असमानता पाती है। जिसमें 8 जिलो में सकारात्मक एवं 13 जिलो में नकारात्मक दसकीय वृद्धि हुई है। जो भविष्य की समस्याओ को इंगित करता है।

अध्ययन क्षेत्र :–

प्रस्तुत लेख का अध्ययन क्षेत्र उत्तर बिहार है, जिसका सीमांकन दक्षिण में गंगा नदी तथा उत्तर में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा नेपाल पूरब में पश्चिम बंगाल तथा पश्चिम में उत्तर प्रदेश द्वारा सीमांकित है। इसका अक्षांशीय विस्तार 25^0 10′ उत्तर से 27^0 31′ उत्तर तक तथा देशान्तरीय विस्तार 83^0 45′ पूरब से 88^0 17′ पूरब के मध्य 56980 वर्गकिलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। यह सागर तल से 30 मीटर से 60 मीटर ऊँचा है। इसका सामान्य ढ़ाल पश्चिम से पूरब 15 से॰मी॰ प्रति किलोमीटर है, जबकि अन्य ढ़ाल उ०–प० से द०–पू० की ओर तथा उ० से द० की ओर है। सम्पूर्ण प्रदेश सघनतम वसाव क्षेत्र हैं जिसका जनघनत्व 1294 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर ळें

अध्ययन का उद्देश्य :–

प्रस्तुत लेख में अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र न्यून लिंगानुपात का भविष्य में क्या स्वरुप होगा। जिसकी पहचान शिशु लिंगानुपात से होता है, घटता शिशु लिंगानुपात भविष्य में अनेक समस्याये उत्पन्न होगे, जिससे क्षेत्र के समाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक आदि दशाये प्रभावित होगे। ये दशाये सतत् विकास में वाधक सिद्ध होगे।

विधि तंत्र :–

प्रस्तुत लेख में आनुभविक विधि का प्रयोग किया गया है जो आँकड़ो पर आधारित है। आँकड़ो का संग्रह, संक्षिप्तीकरण, विश्लेषण में विशेष तकनीकी का प्रयोग किया गया है। आँकड़ो का संग्रह जनगणना विभाग से किया गया है। इन्टरनेट की सहायता से सम्बन्धित आँकड़े प्राप्त किये गये है। लेख के लिए पूर्व में किये गये शोध पत्र–पत्रिकाओ, पुस्तको आदि से अनेक तथ्यो का संग्रह किया गया है। आधुनिक तकनीकी से मानचित्र तथा आरेख बनाया गया है।

0–06 वर्ष के शिशुओ में लिंगानुपात :–

शिशुओ में लिंगानुपात की गणना जन्म से लेकर 06 वर्ष की अवस्था तक माना गया है, इस अवस्था के शिशुओ का साक्षरता गणना में शामिल नही किया जाता है। सामान्यतः लिंगानुपात तीन प्रकार के होते है–

प्राथमिक लिंगानुपात :–

यह गर्भधारण के समय के लिंगानुपात को प्रगट करता है। इस समय प्रत्याशित लिंगानुपात 1:1 नही होता है वरण स्त्री भ्रूण की तुलना में पुरूष भ्रूण अधिक पाये जाते है अनुवांशिक वैज्ञानिको के अनुमानो के अनुसार गर्भ धारण के समय लिंगानुपात 1:1 नही होता वरण प्रति 100 स्त्री भ्रूण की तुलना में पुरूष भ्रूण की संख्या 125 से 135 तक होते हैं। यदपि जन्म से पूर्व स्त्री भ्रूण की तुलना में पुरूष भ्रूण अधिक नष्ट होने के बावजूद भी जन्म के समय स्त्री शिशुओ की तुलना में पुरूष शिशुओ की संख्या अधिक होते है।

द्वितीय लिंगानुपात :–

यह जन्म के समय स्त्री–पुरूष शिशुओ के अनुपात को व्यक्त करता है। सामान्यतः मानव सहित सभी जीवधारियो में स्त्री शिशु की तुलना में पुरूष शिशु अधिक होते है, यदपि जन्मकाल के लिंगानुपात की संख्या कठिन एवं जटिल है क्योकि इसके निर्धारक तत्व अधिक स्पष्ट नही होते है। यदपि विकसित देशो में जन्म के समय पुरूष शिशुओ की तुलना में स्त्री शिशुओ की संख्या अधिक होते है। जैसे 100 स्त्री शिशुओ के अनुपात में U.S.A 95 फ्रास में 94 रूस में 86 पुरूष शिशु होते है जबकि विकासशील देशो में प्रति 100 स्त्री शिशुओ की तुलना में पुरूष शिशुओ की संख्या भारत में 108, पाकिस्तान में 113 बंगालदेश 107 श्रीलंका 105 है।

तृतीय लिंगानुपात :–

जनगणना के समय पाये जाने वाले लिंगानुपात को तृतीयक लिंगानुपात कहते है। इस समय का लिंगानुपात को आयु के आधार पर भी विभक्त किया जाता है। जिसमें 0–06 वर्ष के बच्चो में लिंगानुपात को अलग गणना की जाती है।

शोध क्षेत्र उत्तर बिहार में 0–06 वर्ष के बच्चो में लिंगानुपात काफी असमानात पायी जाती है जो निम्न आँकड़ो से स्पष्ट होता है–

तालिका – 1
जिलावार 0–06 वर्ष के शिशुओ में लिंगानुपात
(प्रति हजार पुरूष शिशुओ में स्त्री शिशुओ की संख्या)

क्र० सं०	जिला	कुल	ग्रामीण लिंगानुपात	नगरीय लिंगानुपात	ग्रामीण नगरीय लिंगानुपात में अन्तर
1	सारण	922	923	908	– 15
2	सिवान	934	937	880	– 57
3	गोपालगंज	945	945	938	– 7
4	मुजफ्फरपुर	917	918	894	– 24
5	पू० चम्पारण	923	923	915	– 8
6	प० चम्पारण	950	953	920	– 33
7	सीतामढ़ी	932	934	881	– 53
8	शिवहर	925	924	948	+ 24
9	वैशाली	894	895	897	+ 3
10	दरभंगा	928	930	909	– 21
11	मधुबनी	931	932	912	– 20
12	समस्तीपुर	941	942	897	– 45
13	सहरसा	928	928	918	– 10
14	सुपौल	942	942	929	– 13
15	मधेपुरा	923	923	931	+ 7
16	पूर्णियाँ	953	953	949	– 4
17	किसनगंज	966	967	952	– 15
18	अररिया	954	954	951	– 3
19	कटिहार	956	958	939	– 19
20	बेगुसराय	911	913	904	– 9
21	खगड़िया	912	912	913	+ 1

तालिका – 1 में जिलावार 0–06 वर्ष के शिशुओ की संख्या को दर्शाया गया है जिसमें प्रति हजार पुरूष शिशुओ की तुलना में स्त्री शिशुओ की संख्या को अंकित किया गया है। इसमें जिला के कुल लिंगानुपात के साथ–साथ ग्रामीण एवं नगरीय लिंगानुपात को भी दर्शाया गया है। जिसमें सबसे अधिक कुल लिंगानुपात किसनगंज जिला में है, जबकि सबसे कम वैशाली जिला में 894 है। अन्य जिलो में कटिहार 956, अररिया 954, पूर्णियाँ 953, प० चम्पारण 950, गोपालगंज 945, सुपौल 942, समस्तीपुर 941, सिवान 934, सीतामढ़ी 932, मधुबनी 931, सहरसा 928, दरभंगा 928, पू० चम्पारण 923, शिवहर 925, मधेपुरा 923, सारण 922, मुजफ्फरपुर 917, खगड़िया 912 तथा बेगुसराय 911 शिशु लिंगानुपात पाया जाता है। किसी भी जिला में लिंगानुपात अधिक नही है वरण सभी जिलो में पुरूष शिशुओ की संख्या काफी कम है।

0–06 वर्ष के शिशुओ में ग्रामीण नगरीय लिंगानुपात
(प्रति हजार पुरुष शिशुओ में स्त्री शिशुओ की संख्या)

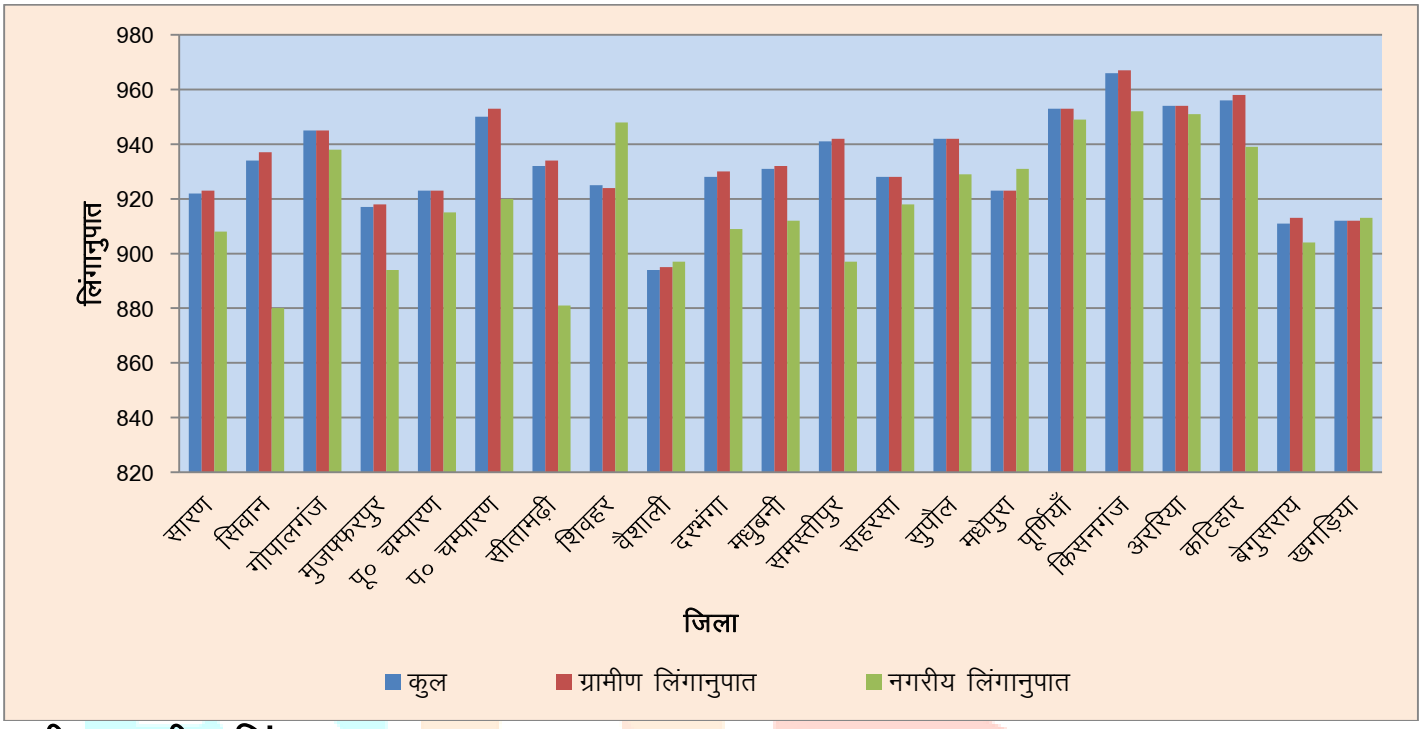

ग्रामीण नगरीय लिंगानुपात :–

शोध क्षेत्र उत्तर बिहार में 0–06 वर्ष के शिशुओ में ग्रामीण एवं नगरीय लिंगानुपात में असमानताये पायी जाती है। प्रायः सभी जिलो के ग्रामीण एवं नगरीय लिंगानुपात में पुरूष शिशुओ की तुलना में स्त्री शिशुओ की संख्या काफी कम है। सबसे अधिक ग्रामीण लिंगानुपात किसनगंज जिला में 967 है, जबकि सबसे कम वैशाली जिला में 894 है। नगरीय शिशु लिंगानुपात से सबसे अधिक किसनगंज जिला में 952 है, जबकि सबसे कम सिवान जिला में 880 है। ग्रामीण–नगरीय शिशु लिंगानुपात में अन्तर सिवान जिला में –57 है जबकि सबसे कम अन्तर खगड़िया जिला +1 है। जिलावार ग्रामीण नगरीय लिंगानुपात में किसनगंज में ग्रामीण 967 नगरीय 952, कटिहार जिला में ग्रामीण 958 नगरीय 939, अररिया में ग्रामीण 956 नगरीय 951, पूर्णियाँ जिला में ग्रामीण 953 नगरीय 949, प० चम्पारण में ग्रामीण 953 तथा नगरीय 920, गोपालगंज में जिला ग्रामीण 945 नगरीय 938, सुपौल जिला में ग्रामीण 942 तथा नगरीय 929, समस्तीपुर जिला में ग्रामीण 942 नगरीय 897, सिवान जिला में ग्रामीण 937 नगरीय 880, सीतामढ़ी जिला में ग्रामीण 934 नगरीय 881, मधुबनी जिला में ग्रामीण 932 तथा नगरीय 912, सहरसा जिला में ग्रामीण 928 नगरीय 918, पू० चम्पारण जिला में ग्रामीण 923 नगरीय 915, शिवहर जिला में ग्रामीण 924 नगरीय 908, मधेपुरा जिला में ग्रामीण 923 नगरीय 931, मुजफ्फरपुर जिला में ग्रामीण 918 नगरीय 894, बेगुसराय जिला में ग्रामीण 923 तथा नगरीय 904, खगड़िया जिला में ग्रामीण 912 नगरीय 913 वैशाली जिला में ग्रामीण 894 तथा नगरीय 897 लिंगानुपात पाया जाता है।

ग्रामीण नगरीय लिंगानुपात में अन्तर :–

अध्ययन क्षेत्र के कुछ नगरो में पुरूष शिशु की अपेक्षा स्त्री शिशु अधिक है अर्थात लिंगानुपात अधिक है जबकि कुछ नगरो में पुरूष शिशु की अपेक्षा स्त्री शिशु कम अर्थात लिंगानुपात कम है। अधिक लिंगानुपात वाले केवल चार जिलो के नगर है जबकि न्यून लिंगानुपात में 17 जिलो के नगर है जो निम्नांकित है–

I. उच्च नगरीय लिंगानुपात वाले जिले :–

इसके अन्तर्गत शिवहर जिला में +54 मधेपुरा जिला में +7 वैशाली जिला में +3 खगड़िया जिला में +1 नगरीय लिंगानुपात पुरूष शिशु की तुलना में स्त्री शिशु अधिक है, जो कुल जिलो का 19.04 प्रतिशत जिला सम्मलित है।

II. न्यून नगरीय लिंगानुपात वाले जिले :–

इसके अन्तर्गत 17 जिले सम्मलित है जो कुल जिलो का 80.96 प्रतिशत जिले है। जिसमें सिवान जिला में 57 सीतामढ़ी जिला में 53 समस्तीपुर जिला में 45 प० चम्पारण जिला में 33 मुजफ्फरपुर जिला में 24 दरभंगा जिला में 21 मधुबनी जिला में 20 कटिहार जिला में 19 सुपौल जिला में 13 सारण जिला में 15 सहरसा जिला में 10 बेगूसराय जिला में 9 पूर्वी चम्पारण जिला में 8 गोपालगंज जिला में 7 पूर्णिया जिला में 4 तथा अररिया जिला में 3 नगरीय शिशु लिंगानुपात में नकारात्मक अन्तर पाया जाता है। इन जिलो में नगरी लिंगानुपात में पुरूष शिशु की तुलना में स्त्री शिशु काफी कम है, जसमें सबसे अधिक नकारात्मक अन्तर सिवान जिला में 57 है जबकि सबसे कम नकारात्मक अररिया जिला में 3 है।

0–06 वर्ष के शिशुओ के नगरीय लिंगानुपात में दसकीय वृद्धि :–

शोध क्षेत्र उत्तर बिहार में 0–06 वर्ष के शिशुओ में नगरीय लिंगानुपात दसकीय वृद्धि में असमानता पायी जाती है। इसके अन्तर्गत 8 ऐसे जिले है जहाँ शिशु लिंगानुपात में सकारात्मक वृद्धि हुई, जबकि 13 जिला में नकारात्मक वृद्धि हुई है। शिशु लिंगानुपात में दसकीय वृद्धि को दो वर्गो में रखा जा सकता है जो निम्न आँकड़ो से स्पष्ट है–

तालिका – 2

0–06 वर्ष के शिशुओ में नगरीय लिंगानुपात दसकीय वृद्धिदर

(प्रति हजार पु० शिशुओ में स्त्री शिशुओ की संख्या)

क्रम संख्या	जिला	2001	2011	दसकीय वृद्धि में अन्तर
1	सारण	949	922	– 27
2	सिवान	934	954	+ 20
3	गोपालगंज	964	945	– 19
4	मुजफ्फरपुर	928	917	– 11
5	पू० चम्पारण	937	923	– 14
6	प० चम्पारण	953	950	– 3
7	सीतामढ़ी	924	932	+ 8
8	शिवहर	916	925	+ 9
9	वैशाली	937	894	– 43
10	दरभंगा	915	928	+ 13
11	मधुबनी	939	931	– 8
12	समस्तीपुर	938	941	+ 3
13	सहरसा	912	928	+ 16
14	सुपौल	925	942	+ 17
15	मधेपुरा	927	923	– 4
16	पूर्णियाँ	967	953	– 14
17	किसनगंज	947	966	+ 19
18	अररिया	963	954	– 9
19	कटिहार	966	956	– 10
20	बेगुसराय	946	911	– 35
21	खगड़िया	932	912	– 20

स्रोत– भारत की जनगणना 2001 एवं 2011

0–06 वर्ष के नगरीय शिशुओ के लिंगानुपात में दसकीय वृद्धि
(प्रति हजार पु० शिशुओ में स्त्री शिशुओ की संख्या)

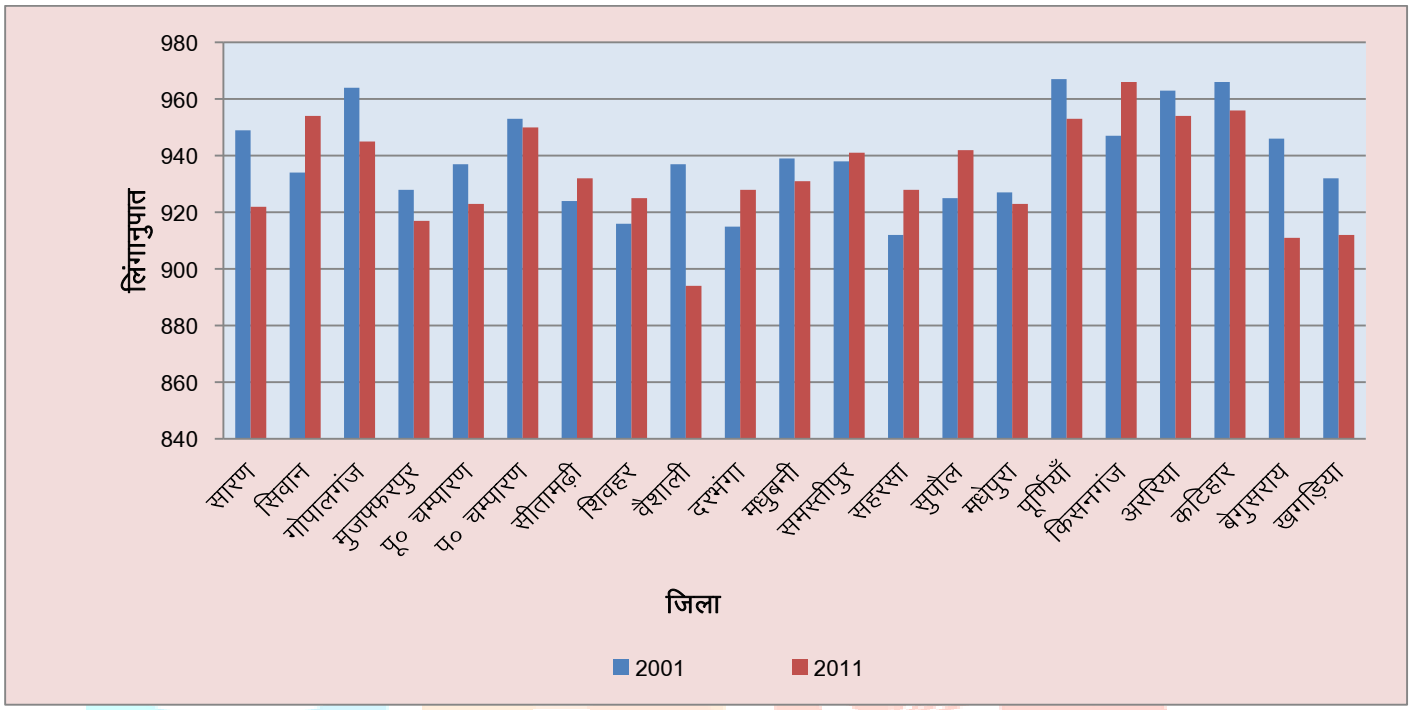

i. 0 – 06 वर्ष के शिशुओ के लिंगानुपात में सकारात्मक वृद्धि वाले जिले :–

इसके अन्तर्गत 8 जिले है जिसमें शिशु लिंगानुपात में सकारात्मक वृद्धि हुई है। इन जिलो में पुरूष शिशुओ की तुलना में स्त्री शिशुओ की संख्या में अधिक वृद्धि हुई है। इसके अन्तर्गत सिवान जिला में 2001 में शिशु नगरीय लिंगानुपात 934 से बढ़कर 2011 में 954 हो गया यहाँ लिंगानुपात में 20 का सकारात्मक वृद्धि हुई। किसनगंज जिला 2001 में शिशु नगरीय लिंगानुपात 997 से बढ़कर 2011 में 966 यानि 19 की सकारात्मक वृद्धि हुई। इसी प्रकार सुपौल जिला में 2001 में 925 से बढ़कर 2011 मे 942 यानि 17 की वृद्धि सहरसा जिला में 2001 में 912 से बढ़कर 2011 में 928 अर्थात 16 की वृद्धि, दरभंगा जिला में 2001 में 915 से 415 से बढ़कर 928 में 13 की वृद्धि, शिवहर जिला में 2001 में 916 से बढ़कर 2011 में 928 में 9 की वृद्धि, सीतामढ़ी जिला में 2001 में 924 से बढ़कर 2011 में 932 अर्थात 8 की वृद्धि तथा समस्तीपुर जिला में 2001 में 938 से बढ़कर 941 में 3 की सकारात्मक वृद्धि हुई। इस वर्ग समूह में शोध क्षेत्र के कुल जिलो को 38.1 प्रतिशत जिला सम्मलित है जहाँ शिशु नगरीय लिंगानुपात में सकारात्मक दसकीय वृद्धि हुई है।

ii. 0 – 06 वर्ष के शिशुओ के नगरीय लिंगानुपात में नकारात्मक वृद्धि वाले जिले :–

इसके अन्तर्गत शोध क्षेत्र के 13 जिले सम्मलित है जहाँ नगरीय शिशु लिंगानुपात में दसकीय वृद्धि नकारात्मक रहा। इसमें सबसे अधिक नकारात्मक वृद्धि वैशाली जिला में 43 तथा सबसे कम नकारात्मक वृद्धि पश्चिम चम्पारण में केवल तीन है। जिलावार नकारात्मक वृद्धि में वैशाली जिला में नगरीय शिशु लिंगानुपात 2001 में 937 से घटकर 2011 में 894 हो गया इस अवधि में लिंगानुपात में 43 की कमी आयी। अन्य जिलो में बेगूसराय जिला में 2001 में शिशु लिंगानुपात 946 से घटकर 2011 में 911 अर्थात 35 की नकारात्मक वृद्धि हुई। सारण जिला में 2001 में 949 से घटकर 2011 में 922 में 27, खगड़िया जिला में 2001 में 932 से घटकर 2011 में 912 में 20, गोपालगंज जिला में 2001 964 से घटकर 2011 में 945 में 19, प० चम्पारण में 2001 में 937 से घटकर 2011 में 923 में 14 का अन्तर पूर्णियाँ जिला में 2001 में 967 से घटकर 2011 में 953 में 14 कटिहार जिला में 2001 में 966 से घटकर 2011 में 956 अर्थात 10

की कमी अररिया जिला में 2001 में 963 से घटकर 2011 में 954 यानि 9 का अन्तर, मधुबनी जिला में 2001 में 939 से घटकर 931 अर्थात 8 का अन्तर, मधेपुरा जिला में 2001 में 927 से घटकर 2011 में 923 में 4 तथा प० चम्पारण में 2001 में 953 से घटकर 950 में 3 नगरीय शिशु लिंगानुपात में नकारात्मक वृद्धि हुई। नकारात्मक वृद्धि वाले जिले कुल जिला का 61.9 प्रतिशत जिले सम्मलित है। इन जिलो में नगरीय शिशुओ में नकारात्मक वृद्धि भविष्य के लिए बड़ी समस्या उत्पन्न होगी।

निष्कर्ष :–

सम्पूर्ण उत्तर बिहार में शिशु लिंगानुपात में स्थानीय तथा जिलास्तर पर न्यूनता पायी जाती है। आज का शिशु लिंगानुपात कल का सामान्य लिंगानुपात होगा। सम्पूर्ण प्रदेश के 13 जिलो में शिशु लिंगानुपात का नकारात्मक एवं 8 जिलो में सकारात्मक वृद्धि भविष्य के घटते लिंगानुपात का सूचक है। संतुलित लिंगानुपात के लिए समाजिक शिशु एवं जागरुकता सभी का समाज में स्थान, स्त्री शिक्षा आदि के लिए सरकारी प्रयास की अनिवार्यता है। शिशु भ्रूण हत्या पर कठोर नियम एवं स्त्री शिशु के लिए प्रोत्साहन लिंगानुपात वृद्धि के लिए आवश्यक है जिससे सामाजिक आर्थिक विकास में साधक हो तथा सामाजिक प्रदूषण को कम किया जा सके।

–: संदर्भ ग्रंथ :–

1. Chandna R॰ C॰ – "Introduction of Population Geography" Kalyani Publishers, New Delh.
2. Clark John – "Rural and Urban Sex Ratio in England and Wales"
3. Gopal G॰ S॰ – "Regional Aspects of Rural Literacy in India" Transations of Indian council of Geographer, Vol. 04
4. Gopal G॰ S॰ – "Literacy in India : An Interpretative Study" Rural Sociology, Vol. 29
5. Mitra Ved – "Education Ancient India" Arya Book Depot, New Delhi.
6. चाँदना आर० सी० : जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2006.
7. चौहान पी० आर० : भारत का वृहद् भूगोल, बसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर।
8. भारत की जनगणना सार 1991 : जनगणना परिचालन बिहार।
9. भारत की जनगणना सार 2001
10. भारत की जनगणना सार 2011 : बिहार श्रृखला 11
11. र्शमा एन० : बिहार की भौगोलिक समीक्षा, बसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर।